अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद : एक दृष्टिकोण

* डॉ. बद्री नाथ सिंह ** डॉ. अखिलेश कुमार सिंह

आतंकवाद का तात्पर्य हिंसा अथवा धमकी से सम्बन्धित उन सभी कार्यो से है जिसका उद्देश्य किसी राज्य अथवा संगठन के हितों को क्षति पहुँचाना अथवा उससे किसी प्रकार की रियायत पाना हो। आतंकवाद का सर्वप्रथम प्रयोग ब्रुसेल्स में दंड विधान को समेकित करने के लिए 1931 में बुलाये गये तीसरे सम्मेलन में किया गया था जिसमें आतंकवाद का अभिप्राय '' जीवन की भौतिक अखण्डता, अथवा मानव स्वास्थ्य को खतरे में डालने अथवा बड़े पैमाने पर सम्पत्ति को क्षति पहुँचाने वाला कार्य करके जानबूझकर भय का वातावरण उत्पन्न करना है।''[1] यदि वैयक्तिक पारिवारिक, सामुदायिक, सांस्कृतिक तथा सामाजिक विघटन के लिए किसी एक समस्या का विशेष उल्लेख किया जाय तो उसे 'आतंकवाद' कहा जा सकता है। साधारणतया आतंकवाद का अभिप्राय हिंसक घटनाएँ घटित कर आतंक उत्पन्न करना है। आतंक उत्पन्न करने के पीछे किसी संगठन अथवा समूह का कोई निश्चित लक्ष्य प्राप्त करना होता है। यह लक्ष्य राजनीतिक, धार्मिक एवं मनोवैज्ञानिक अथवा किसी संगठन विशेष के हितपूर्ति का भी हो सकता है। आतंकवाद में ऐसे बर्बर एवं हिंसक तरीकों को अपनाया जाता है जिन्हें आज के सभ्य मानवतावादी समाज में स्वीकार नहीं किया जाता है। क्योंकि इसके परिणाम सदैव ही विध्वंशक एवं विनाशक होते हैं। पॉल विलकिंसन के शब्दों में, '' राजनीति की भाषा में आतंकवाद बहुसंख्यक लोगों के निर्णय के विरूद्ध कुछ लोगों अथवा उनके संगठन द्वारा अपनी इच्छाओं को पूरा करवाने का एक हिंसक हथियार है।''[2]

वस्तुतः आतंकवाद कोई विचारधारा (Ideology) या सिद्धान्त (theory) नहीं वरन् यह एक तरीका (Method), एक प्रक्रिया (Procesas) या फिर एक उपकरण (Instrument) है जिसका प्रयोग कर कोई भी राज्य, राजनीतिक संगठन, स्वतंत्रतावादी समूह, अलगाववादी संगठन, जातीय व धार्मिक उन्मादी अपने उद्देश्य को प्राप्त करना चाहते है।[3] आतंकवाद का सामान्यतः नकारात्मक अर्थ होता है। यदि आतंकवादी घटनाओं पर दृष्टिपात किया जाय तो इनके आक्रमण की शैली लगभग गुरिल्ला शैली की तरह लगती है। लेकिन दोनों में व्यापक भिन्नताएँ हैं। सामान्यतया आतंकवाद के अर्न्तगत उन सभी गतिविधियों को सम्मिलित कर लिया जाता है जिसका उद्देश्य सरकार को या जनता को आतंकित करना, साम्प्रदायिक शांति व सौहार्द को भंग करना तथा बम, डाइनामाइट या अन्य विस्फोटक पदार्थों, अथवा आग लगाने वाले पदार्थों या आग्नेयास्त्रों या जहरीली गैसों या रासायनिक पदार्थों आदि का इस तरह उपयोग करना है जिससे या तो लोग हताहत हो या सम्पत्ति नष्ट हो या आवश्यक सेवाओं में गड़बड़ी उत्पन्न हो।[4] अतएव यह कहना उपयुक्त होगा कि आतंकवाद की गतिविधियाँ विध्वंशक एवं विनाशक होती हैं। आज आतंकवाद का वैश्वीकरण हो रहा है। आतंकवादी संगठन परस्पर सम्बंध स्थापित करके एक दूसरे को अपने समान मानकर परस्पर सहायता कर रहे हैं और उनके लक्ष्य प्राप्ति में सहायक होते जा रहे हैं। अतएव यह कहना अतिशयोक्ति न होगा कि आतंकवाद का वैश्वीकरण Globalization of Terrorigm हो गया है।

यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि राष्ट्रीय आतंकवाद एवं अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद में अन्तर होता है, जब किसी राष्ट्र में कोई स्वतंत्रता चाहने वाला संगठन या किसी विशेष विचारधारा से प्रतिबद्ध कोई समूह विदेशी सरकार को हटाकर स्वदेशी सरकार स्थापित करने हेतु आतंकवाद का सहारा लेकर अपना लक्ष्य प्राप्त करना चाहते है तो इसे राष्ट्रीय आतंकवाद कहते हैं जबकि अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद में जब कोई ऐसा संगठन जो अपने लक्ष्य की प्राप्ति में विश्व जनमत की सहमति आवश्यक समझता है और उसे प्रभावित करने के लिए आतंकवाद का प्रयोग करता है अथवा किसी दूसरे देश में सरकार का तख्ता पलटने का आतंकवाद के द्वारा प्रयास करता है तो उसे अन्तराष्ट्रीय आतंकवाद कहते हैं।[5] पॉल विल्किंसन ने चार प्रकार के आतंकवाद का उल्लेख किया है– पूर्ण दमनकारी आतंकवाद, वैचारिक आतंकवाद, क्रान्तिकारी आतंकवाद एवं युद्धोन्मादी आतंकवाद।[6] यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि आतंकवाद के दो प्रमुख चेहरे हैं, पहला; धार्मिक आतंकवाद और दूसरा; राजनीतिक आतंकवाद। धार्मिक आतंकवाद के रूप में इस्लामी आतंकवाद आज सबसे बड़ी समस्या बना हुआ है। धार्मिक आतंकवाद का आरम्भ यहूदी आतंकवादी संगठन 'हागानाह' की स्थापना के द्वारा सन् 1920 में हुआ। हागानाह को आधुनिक धार्मिक आतंकवाद का जनक कहा जा सकता है। इसका उद्देश्य यहूदियों को संगठित करके जर्मनी की तानाशाह सरकार को कमजोर बनाना था। तदोपरान्त इस्लामी आतंकवाद का आरम्भ सन् 1928 में मिस्र में हुआ जब 'हागानाह' के विरोध में इख्वान उल –मुसलमीन (मुस्लिम भाईचारा) नाम से एक आतंकवादी संगठन स्थापित किया गया। राजनीतिक आतंकवाद सन् 1921 में आयरिश रिपब्लिकन आर्मी द्वारा हुआ। इसका उद्देश्य आयरलैण्ड को ब्रिटेन से अलग करने के लिए सरकार पर दबाव डालना था। सन् 1960 तक आतंकवादी

* रीडर, रक्षा अध्ययन विभाग, पी.जी. कॉलेज, गाजीपुर।
** गाजीपुर

गतिविधियाँ सीमित रही। लेकिन इसके बाद आतंकवाद ने संगठित खूनी और विश्वव्यापी रूप लेना आरम्भ कर दिया। यह महसूस किया जाने लगा कि आतंकवाद के दूसरे तरीके जहाँ वेहद खर्चीले और कम विश्वसनीय हैं वहीं धार्मिक आतंकवाद कम खर्चीला और ज्यादा विश्वसनीय है। विश्व के विभिन्न देशों में बढ़ते हुए आतंकवाद के कारण आधुनिक सभ्यता में ही निहित है। पार्द एलेक्जेंडर का विचार है कि विध्वशंक हथियारों में होने वाली वृद्धि, उद्योगों का केन्द्रीयकरण, आतंकवादी समूहों की युद्ध क्षमता में वृद्धि, संचार की नयी विधियाँ एवं उपकरण, तस्करी द्वारा हथियार व धन जमा करने के प्रयत्न आदि आतंकवाद के प्रमुख कारण है।[7] लोकमित्र ने अपने एक लेख ''आतंकवाद युवाओं के कन्धों पर'' में लिखा है कि दुनिया में जहाँ कही भी आतंकवाद जारी है वह युवकों के सहारे ही आगे बढ़ रहा है।[8] स्टरलिंग क्लैरी का मानना है कि खाड़ी के देशों, अफगानिस्तान तथा पाकिस्तान में आतंकवाद के बढ़ने अथवा आतंकवाद के फैलाने का मुख्य कारण वहाँ की सैनिक सरकारें रही है। [9] दहशत फैलाने के लिए विभिन्न प्रकार के विस्फोटकों एवं आधुनिक विध्वंशक यन्त्रों का विभिन्न शैली में प्रयोग कर रहे हैं। आतंकवादियों द्वारा विभिन्न अमानवीय कृत्य भी किये जाते हैं, जैसे बाढ की नौबत लाना, जहरीले पदार्थों से, पीने के पानी को दूषित करना, खाद्य पदार्थों में जहर मिलाना, परिवहन व संचार माध्यमों को बाधित करना आदि। आतंकवादी संगठनों द्वारा अत्याधुनिक हथियारों में ए0 के0 47, ए0 के0 56 राइफलें, आर0डी0एक्स0 (विस्फोटक) स्टिंगर मिसाइलें, रॉकेट लांचर आदि घातक हथियार सम्मलित हैं साथ ही अपने उद्देश्य और योजनाओं को सफल बनाने के लिए नयी तकनीकियों एवं उपकरणों– सेलफोन, कम्प्यूटर, लैपटाप, इत्यादि का प्रयोग भी विशेष रूप में कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त 'मानव बम' जो स्वयं अपने जीवन को किसी बड़े उद्देश्य को पूरा करने हेतु कुर्बान करने के लिए तैयार हो जाते है। यह एक मनोवैज्ञानिक स्थिति है जिसे जनून के साथ नियमित रूप से धीरे–धीरे तैयार किया जाता है।[10] मानव जाति के विनाश के लिए रोगाणु (वैक्टीरिया) एवं जीवाणु (वायरस) को सुनियोजित तरीके से किसी देश में फैलाना आतंकवादी गतिविधियों में शामिल हैं। इसकी सम्भावना परमाणु बमों जैसी है। इन बीमारियों के रोगाणु विमान द्वारा वातावरण में छोड़े जा सकते है।

आज आतंकवाद ने विश्वव्यापी संकट उत्पन्न करके लोगों कों इस दिशा में सोचने पर विवश कर दिया है। एक आँकड़े के अनुसार '' 1968 से 1980 के मध्य राजनीतिक अपहरण की संख्या 400 से अधिक थी, बम फैकने की 29279 घटनाएँ हुई, विमान अपहरण की 173, यंत्र बमों की 470 तथा हमलों की 278 घटनाएं घटी। अमेंरिकी विदेश मंत्रालय के आतंकवादी विरोधी कार्यालय की एक रिर्पोट के अनुसार 1980 के जनवरी से अप्रैल तक 10 दूतावासों पर आतंकवादियों ने कब्जा किया जिनमें केवल लैटिन अमेंरिका के देशों में 8 थी। वास्तव में देखा जाय तो आज आतंकवाद एक अन्तर्राष्ट्रीय उद्योग बन गया है, जिसे आतंकवादी संगठन द्वारा वित्तीय सहयोग मिल रहा है। अब तो आतंकवादी अपनी हरकतों को उचित ठहराने के लिए तरह–तरह की दलीले देने लगे हैं। हिसंक पोलटिकल साइकोलाजी की संस्थापिका ' डॉ0 जीन नटसन' के अनुसार आतंकवादी स्वयं को अपराधी मानने के बजाय स्वतंत्रता सेनानी मानते है उन्हे तब बड़ा लाभ मिलता है जब उनकी विचारधारा को जनता का समर्थन मिलता है। डॉ0 डी0 एन सिंह का मानना है कि अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवादियों की कार्यवाहियाँ विभिन्न राष्ट्रों तथा उनकी सरकारों को इस हद तक भयभीत कर देती हैं कि वे आतंकवादियों के सम्मुख घुटने टेक देते हैं तथा उनकी नाजायज माँगे स्वीकार कर लेते हैं। अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद किसी विदेशी व्यक्ति को शिकार बनाकर किसी अन्य देश की सीमा क्षेत्र में अपराधपूर्ण कार्य करके किसी अन्य देश की नीति को प्रभावित करने का प्रयास करता है।[11]

विमान अपहरण, म्यूनिख ओलम्पिक में हुआ आक्रमण, अर्जेन्टाइना एवं ग्वाटेमाला अमेंरिकी राजनयिकों की हत्या, खारतूम, कारडोवा और बेरूत में आतंकवादी अपहरण, स्टाकहोम में जर्मन दूतावास पर कब्जा, अमरिका में सबसे सुरक्षित भवन पेन्टागन एवं विश्व व्यापार केन्द्र, भारतीय संसद एवं अन्य शहरों में आत्मघाती हमलों एवं सीरियल बम विस्फोट आदि ऐसे दृष्टान्त है जिन्हें कभी भुलाया नहीं जा सकता। इससे प्रतीत होता है कि विश्व के भिन्न–भिन्न हिस्सों में दहशत उत्पन्न कर अपनी विचारधारा को सशक्त समर्थन के साथ अपने उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु सफल रूप में स्थापित करना उनकी प्राथमिकता एवं उद्देश्य है। दुर्भाग्य यह है कि अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवादियों को विश्व के अनेक देश वित्तीय सहायता दे रहे है। आतंकवादी संगठनों का स्वामी बनने के लिए लीबिया अपने पेट्रोडालर का प्रयोग कर रहा है। सीरिया और इराक भी पीछे नहीं है। आतंकवादियों को लीबिया, प्रशिक्षण शिविर लगाकर हथियार तथा झूठे दस्तावेज उपलब्ध करा रहा है। पाकिस्तान, बाग्लादेश, रूस, क्यूबा, पूर्व जर्मनी और बुल्गारिया में भी आतंकवादी संगठन सक्रिय है। अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद का समय रहते यदि उचित जवाब नहीं दिया गया तो इनके खूनी पंजे से दुनिया के राष्ट्रों को अपनी गर्दन छुड़ाना कठिन हो जायेगा। यह तभी सम्भव होगा जब अन्तर्राष्ट्रीय समाज इस चुनौती का मिलकर सामना करे।

सन्दर्भ–1. प्रतियोगिता दपर्ण – दिसम्बर 2001–849 2.पॉल विलकिंसन– पोलिटिकल टेरोरिजम – पृ0 6 3. प्रतियोगिता दपर्ण, दिसम्बर 2001, पृ0 849 4. कांफ्लिक्ट रिज्युलुसन– वाल्यूम 31, नम्बर 1, मार्च 1987 5. प्रतियोगिता दपर्ण दिसम्बर 2001 – 849 6. पॉल विलकिंसन– पोलिटिकल टेरोरिजम – पृ0 6 7. पार्द एलेक्जेंडर एवं फिंगर, आतंकवाद, इन्टर डिसिप्लिनरी प्रास्पेक्टिव 8. दैनिक जागरण, 14 अक्टूबर 2001 साप्ताहिक परिशिष्ट, पृ0 11 9. स्टरलिंग क्लैरी, द टेरर नेटवर्क, 1985 10. प्रतियोगिता दपर्ण 2001 – 851 11. डा0 डी0 एन0 सिंह, राष्ट्रीय सुरक्षा, 2003, पृष्ट 120–21